मोतीहारी (बिहार) में नया आकाशवाणी केन्द्र

*1268. **श्री विभूति मिश्र** : क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या आकाशवाणी के दिल्ली तथा पटना केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रम उत्तर बिहार, विशेषकर चम्पारन के श्रोताओं को सुनाई नहीं देते हैं ;

(ख) क्या चम्पारन जिले के समीपवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नेपाल के लोग इन प्रसारणों का लाभ नहीं उठा सकते ; और

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार का विचार मोतीहारी में आकाशवाणी केन्द्र स्थापित करने का है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRIMATI NANDINI SATPATHY) : (a) The Patna station of A. I. R. is audible in North Bihar, including Champaran. The reception of broadcast in Champaran district will improve further after the high power transmitter in Gorakhpur is commissioned next year. The medium wave service from Delhi is not normally expected to cover Bihar. However, even this can be received there at night.

(b) They can listen to these broadcasts.

(c) There is no plan at present to set up a radio station at Motihari.

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही है कि इस विभाग के पिछले मंत्री, श्री सत्य नारायण सिंह, की मौजूदगी में-और मैं भी हाजिर था-यह तय पाया था कि मोतीहारी में रेडियो स्टेशन बनाया जाये, ताकि नेपाल तराई का काठमांडू तक का इलाका, जो भोजपुरी इलाका है, कवर हो सके ?

SHRIMATI NANDINI SATPATHY : It may be correct that the hon. Member had some discussion with the then Minister, Mr. K. K. Shah or Mr. Satya Narayan Sinha, but no decision was taken at any time to set up a radio station at Motihari. As far as Nepal is concerned, AIR is broadcasting to Nepal through its medium wave and short wave transmitter twice in a day from Delhi,

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष महोदय, ये दोनों आदमी जिन्दा हैं (व्यवधान) और दोनों राज्यपाल हैं। प्राइम मिनिस्टर भी, बैठी हुई हैं। मंत्री महोदय उनसे पूछ लें कि यह फैसला हुआ था या नहीं। उन्होंने यह फैसला किया था। मैं झूठ नहीं बोलता हूं।

ए० आई० आर० से भोजपुरी का पर्याप्त प्रसारण नहीं होता है ; जैसा कि मैंने कहा है, नेपाल तराई का इलाका एक भोजपुरी इलाका है। आज परिस्थिति यह है कि इधर से नक्सलाइट्स उधर जाते हैं और उधर से इधर आते हैं। इस एरिया को कवर करने के लिए एक पावरफुल रेडियो स्टेशन की जरूरत है। गोरखपुर और पटना से भोजपुरी का प्रसारण नहीं होता है। इस स्थिति में क्या सरकार भोजपुरी इलाके को कवर करने के लिए कोई रेडियो स्टेशन स्थापित करने की जरूरत समझती है ?

SHRIMATI NANDINI SATPATHY : As I have already explained, at this moment, it is not possible to have a radio station at Motihari. But as the hon. Member said, for Bhojpuri, this can be discussed later on and it can be considered for the fifth plan.

धागे के मूल्य में वृद्धि के कारण हथकरघा और विद्युत चालित करघा उद्योगों का बन्द हो जाना

*1269. **श्री नाथूराम अहिरवार** : क्या विदेश व्यापार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में सूती मिलों द्वारा अत्यधिक मूल्य पर धागा बेचे जाने के कारण हथकरघा और विद्युत चालित करघा उद्योग बन्द होने वाला है ; और

(ख) क्या सरकार का विचार उक्त संकटग्रस्त उद्योग को उचित मूल्य पर धागा उपलब्ध कराने का है जिससे इसमें बड़ी संख्या में काम करने वाले लोगों को उक्त उद्योग बन्द होने के संकट से बचाया जा सके ?

THE MINISTER OF FOREIGN TRADE (SHRI L. N. MISHRA) : (a) No, Sir.

(b) A statement showing the steps taken by Government to check the rise in the prices of cotton and cotton yarn and to supply yarn to handloom and powerloom weavers, etc., is laid on the Table of the House.

Statement

The following steps have been taken by Government to check the rise in the prices of cotton yarn and to supply cotton yarn to power-loom and handloom weavers etc., at reasonable prices :—

1. To augment the supply of cotton, with a view to meeting the shortfall in domestic production, import of additional foreign cotton and staple fibre in large quantities have been arranged. In addition various measures were taken to regulate more stringently stocks, credit control and other trading facilties.

2. In order to assist the cotton handloom, powerloom and hosiery sectors, a pool of cotton carded yarn has been created. Supplies from the pool are made through the Directors of Industries/Handlooms in the States concerned.

The situation is being watched closely and such further measures as may be considered necessary will be taken from time to time. It may, however, be stated that, as a result of the various steps mentioned above, the prices of yarn in the open market have already come down substantially and is nearly at par with the prices prevailing in November, 1970.

श्री नाथूराम अहिरवार : मंत्री महोदय ने कहा है कि सूत की कीमत बढ़ने से पावरलूम बन्द नहीं हो रहे हैं। मेरे क्षेत्र में यह स्थिति है कि लोगों ने कर्ज लेकर पावरलूम लगाये हैं, लेकिन उनके पास इतनी पूंजी नहीं है कि वे सूत खरीद सकें। उनको सूत बहुत महंगी कीमत पर मिलता है। इसलिए मेरे क्षेत्र में जितने भी पावरलूम हैं, वे बन्द पड़े हैं। क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि उन लोगों को सूत खरीदने के लिए बैंकों द्वारा कर्ज दिये जायें, तथा उन को सस्ते दाम पर सूत दिलाने का प्रबन्ध किया जाये ?

श्री एल० एन० मिश्र : जहां तक विदेश व्यापार मंत्रालय का प्रश्न है, हमारी यह जवाबदेही है कि हम कपास और कपास खरीदने के लिए बैंक क्रेडिट दिलायें। जहां तक सूत खरीदने और दैनिक काम-काज का प्रश्न है, उस का संबंध राज्य सरकारों से है और राज्य सरकारें ही उन लोगों को मदद कर सकती है। जहां तक केन्द्रीय सरकार का सवाल है, हम ने यह व्यवस्था की है कि उनकी बैंक क्रेडिट सुविधा से मिल सकें और विदेशी कपास को भी इस ढंग से दिया जाये कि उनको सुविधा हो।

श्री नाथूराम अहिरवार : मंत्री महोदय ने कहा है कि यह काम राज्य सरकारों का है। क्या केन्द्रीय सरकार इस बारे में राज्य सरकारों को लिखेगी कि हाथ करघा एवं पावरलूम और छोटे धंधों को पनपने के लिए उन लोगों को स्पेशल क्वोटा दिया जाये, ताकि उन लोगों को यह जो नुक्सान हो रहा है, वह न हो तथा वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकें ?

श्री एल० एन० मिश्र : हम माननीय सदस्य का सुझाव प्रत्येक राज्य सरकार को भिजवा देंगे।

श्री सूरज भांडे : उत्तर प्रदेश में खास तौर से गोरखपुर और मऊ दो ऐसे बड़े सैंटर हैं, जहां हथकरघे बन्द हो गये हैं, क्योंकि सूत नहीं मिलता है। स्टेटमेंट में कहा गया है कि सूत सप्लाई करने के लिए पग उठाये गये हैं। लेकिन हकीकत में उन लोगों को सूत नहीं मिल रहा है। क्या सरकार उन क्षेत्रों में कोई खास कदम उठायेगी ? जहां हथकरघे बन्द हो रहे हैं और बड़ी भारी

बेकारी हो रही है, ताकि उन लोगों को सस्ते दामों पर सूत मिल सके ?

श्री एल० एन० मिश्र : माननीय सदस्य कुछ गलतफहमी में हैं। देश में सूत की कमी नहीं है खास कर के लघु उद्योग वाले जो हैं चाहे पावरलूम के हों चाहे हैंडलूम के हों, उस के जहां तक वितरण का प्रश्न है वह डायरेक्टर आफ इंडस्ट्रीज करते हैं और वहां के लोगों के जरिए वह बांटा जा रहा है। जिस प्रान्त का जो कोटा है वह हम दे रहे हैं और सस्ते भाव पर दे रहे हैं। एक समय था जनवरी 1971 में जब कुछ कठिनाई हुई थी। उस के बाद 1 लाख बेल विदेशी कपास हमने बांटा और दूसरा भी जो विदेशी कपास था उसका भी वितरण किया। देश में सूत की कमी नहीं है और जहां तक उसके वितरण का प्रश्न है वह प्रान्तीय सरकार को करना है जिस प्रान्त में हमें जितना कोटा देना है वह हम दे रहे हैं।

श्री सूरज पांडे : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है। हमारी इन्फार्मेशन और है, मिनिस्टर की और है, तो इसका फैसला यहां अब कौन करेगा ? लोगों को सूत मिल नहीं रहा है और लोग परेशान हैं, वह कहते हैं कि हम दे रहे हैं।

MR. SPEAKER : No arguments, please.

SHRI DHAMANKAR : May I know from the hon. Minister whether the government has any information that powerlooms in Bhiwandi and other parts have closed down for want of supply of nylon and rayon yarn ? Have government received representation ?

SHRI L. N. MISHRA : That is a separate question. This is about cotton yarn. There is some difficulty about nylon and rayon yarn and we have been importing them. Recently we have made some special allotment, so far as nylon yarn is concerned.

SHRI K. K. RAMI REDDY : Since the levy of excise duty on yarns above 60 count is a contributory factor for the price rise, may I know whether any representation has been made by the handloom industry for exemption ? If so, what is the reaction of the government ?

SHRI L. N. MISHRA : Representations have been received and they have been examined also. I cannot give any assurance at this stage.

SHRI DINEN BHATTACHARYYA : In reply to the first part of the question the hon. Minister said that the powerloom industry is not on the verge of closure. Our information is that a large number of composite and spinning mills have closed down already and a large number of powerlooms are also on the point of closure. Has the Minister any definite information on this ?

SHRI L. N. MISHRA : Our information is that not many are closed or on the verge of closure. There was a situation like that in the early part of the year. The situation has improved after that as a result of certain facilities provided to them. If the hon. Member is interested, I can give him a list of the special facilities we have given to the powerloom and handloom sector.

SHRI S. R. DAMANI : As the hon. Minister has rightly pointed out, the textile industry had a difficult time because of the failure of the cotton crop. So. government gave an assurance to import 13 lakhs of bales to meet this shortage and 9 lakhs bales have already been imported. May I know by what time the remaining quantity is going to be imported to meet the shortage, to bring down the prices and to avoid closure of powerlooms and textile mills ?

SHRI L. N. MISHRA : No mill or powerloom has been closed down for want of cotton. It is a fact that we have not been able to import all the contracted quota of cotton. We have contracted for 11.22 lakhs bales and some of them have arrived and some are in the high seas. I cannot give definite information as to how much of the contracted cotton has reached the country.

Strengthening of Eastern Borders on the Basis of National Consciousness and Integrity

*1270. SHRI N. TOMBI SINGH : Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state :

(a) the measures taken or being taken by Government to strengthen the borders in the aspect of national consciousness and integrity